श्री रामचरित मानस

लंका काण्ड - ३

छंद

जब कीन्ह तेहिं पाषंड | भए प्रगट जंतु प्रचंड ||
बेताल भूत पिसाच | कर धरें धनु नाराच || १ ||
जोगिनि गहें करबाल | एक हाथ मनुज कपाल ||
करि सद्य सोनित पान | नाचहिं करहिं बहु गान || २ ||

धरु मारु बोलहिं घोर | रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ||
मुख बाइ धावहिं खान | तब लगे कीस परान || ३ ||
जहँ जाहिं मर्कट भागि | तहँ बरत देखहिं आगि ||
भए बिकल बानर भालु | पुनि लाग बरषै बालु || ४ ||

जहँ तहँ थकित करि कीस | गर्जेउ बहुरि दससीस ||
लछिमन कपीस समेत | भए सकल बीर अचेत || ५ ||
हा राम हा रघुनाथ | कहि सुभट मीजहिं हाथ ||
एहि बिधि सकल बल तोरि | तेहिं कीन्ह कपट बहोरि || ६ ||

प्रगटेसि बिपुल हनुमान | धाए गहे पाषान ||
तिन्ह रामु घेरे जाइ | चहुँ दिसि बरूथ बनाइ || ७ ||
मारहु धरहु जनि जाइ | कटकटहिं पूँछ उठाइ ||
दहँ दिसि लँगूर बिराज | तेहिं मध्य कोसलराज || ८ ||

छंद

तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही |
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी |
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महुँ माया हरी || १ ||

माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे |
सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ||
श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं |
सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं || २ ||

दोहा
ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास |
जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास || १०१ (क) ||
काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस |
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि ब्याकुल देखि कलेस || १०१ (ख) ||

काटत बढ़हिं सीस समुदाई | जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ||
मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा | राम बिभीषन तन तब देखा ||
उमा काल मर जाकीं ईछा | सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ||
सुनु सरबग्य चराचर नायक | प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक ||

नाभिकुंड पियूष बस याकें | नाथ जिअत रावनु बल ताकें ||
सुनत बिभीषन बचन कृपाला | हरषि गहे कर बान कराला ||
असुभ होन लागे तब नाना | रोवहिं खर सृकाल बहु स्वाना ||
बोलहि खग जग आरति हेतू | प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ||

दस दिसि दाह होन अति लागा | भयउ परब बिनु रबि उपरागा ||
मंदोदरि उर कंपति भारी | प्रतिमा स्त्रवहिं नयन मग बारी ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

छंद

प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति बात बह डोलति मही |
बरषहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ||
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहि जय जए |
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ||

दोहा

खैचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस |
रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस || १०२ ||

सायक एक नाभि सर सोषा | अपर लगे भुज सिर करि रोषा ||
लै सिर बाहु चले नाराचा | सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ||
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा | तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ||
गर्जेउ मरत घोर रव भारी | कहाँ रामु रन हतौं पचारी ||

डोली भूमि गिरत दसकंधर | छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ||
धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई | चापि भालु मर्कट समुदाई ||
मंदोदरि आगें भुज सीसा | धरि सर चले जहाँ जगदीसा ||
प्रबिसे सब निषंग महु जाई | देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई ||

तासु तेज समान प्रभु आनन | हरषे देखि संभु चतुरानन ||
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा | जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा ||
बरषहि सुमन देव मुनि बृंदा | जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ||

छंद

जय कृपा कंद मुकंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो |
खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही |
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ||

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं |
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं ||
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने |
जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने ||

दोहा

कृपादृष्टि करि प्रभु अभय किए सुर बृंद |
भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकंद || १०३ ||

पति सिर देखत मंदोदरी | मुरुछित बिकल धरनि खसि परी ||
जुबति बृंद रोवत उठि धाईं | तेहि उठाइ रावन पहिं आई ||
पति गति देखि ते करहिं पुकारा | छूटे कच नहिं बपुष सँभारा ||
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना | रोवत करहिं प्रताप बखाना ||

तव बल नाथ डोल नित धरनी | तेज हीन पावक ससि तरनी ||
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा | सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ||
बरुन कुबेर सुरेस समीरा | रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा ||
भुजबल जितेहु काल जम साईं | आजु परेहु अनाथ की नाईं ||

जगत बिदित तुम्हारी प्रभुताई | सुत परिजन बल बरनि न जाई ||
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा | रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ||
तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा | सभय दिसिप नित नावहिं माथा ||
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं | राम बिमुख यह अनुचित नाहीं ||
काल बिबस पति कहा न माना | अग जग नाथु मनुज करि जाना ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

छंद

जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं |
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ||
आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं |
तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ||

दोहा

अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन |
जोगि बृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान || १०४ ||

मंदोदरी बचन सुनि काना | सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ||
अज महेस नारद सनकादी | जे मुनिबर परमारथबादी ||
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी | प्रेम मगन सब भए सुखारी ||
रुदन करत देखीं सब नारी | गयउ बिभीषनु मन दुख भारी ||

बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा | तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ||
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो | बहुरि बिभीषन प्रभु पहिं आयो ||
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका | करहु क्रिया परिहरि सब सोका ||
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी | बिधिवत देस काल जियँ जानी ||

दोहा

मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि |
भवन गई रघुपति गुन गन बरनत मन माहि || १०५ ||

आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो | कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ||
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला | जामवंत मारुति नयसीला ||
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा | सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ||
पिता बचन मैं नगर न आवउँ | आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना | कीन्ही जाइ तिलक की रचना ||
सादर सिंहासन बैठारी | तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ||
जोरि पानि सबहीं सिर नाए | सहित बिभीषन प्रभु पहिं आए ||
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे | कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे ||

छंद

किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो |
पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ||
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं |
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ||

दोहा

प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज |
बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज || १०६ ||

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना | लंका जाहु कहेउ भगवाना ||
समाचार जानकिहि सुनावहु | तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ||
तब हनुमंत नगर महुँ आए | सुनि निसिचरी निसाचर धाए ||
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही | जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ||
दूरहि ते प्रनाम कपि कीन्हा | रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ||
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता | कुसल अनुज कपि सेन समेता ||
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा | मातु समर जीत्यो दससीसा ||
अबिचल राजु बिभीषन पायो | सुनि कपि बचन हरष उर छायो ||

छंद

अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा |
का देउँ तोहि त्रेलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं |
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ||

दोहा

सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत |
सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत || १०७ ||

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता | देखौं नयन स्याम मृदु गाता ||
तब हनुमान राम पहिं जाई | जनकसुता कै कुसल सुनाई ||
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन | बोलि लिए जुबराज बिभीषन ||
मारुतसुत के संग सिधावहु | सादर जनकसुतहि लै आवहु ||

तुरतहिं सकल गए जहँ सीता | सेवहिं सब निसिचरीं बिनीता ||
बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो | तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो ||
बहु प्रकार भूषन पहिराए | सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए ||
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही | सुमिरि राम सुखधाम सनेही ||

बेतपानि रच्छक चहुँ पासा | चले सकल मन परम हुलासा ||
देखन भालु कीस सब आए | रच्छक कोपि निवारन धाए ||
कह रघुबीर कहा मम मानहु | सीतहि सखा पयादें आनहु ||
देखहुँ कपि जननी की नाईं | बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं ||

सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे | नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे ||
सीता प्रथम अनल महुँ राखी | प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी ||

दोहा

तेहि कारन करुनानिधि कहे कछुक दुर्बाद |
सुनत जातुधानीं सब लागीं करै बिषाद || १०८ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

प्रभु के बचन सीस धरि सीता | बोली मन क्रम बचन पुनीता ||
लछिमन होहु धरम के नेगी | पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ||
सुनि लछिमन सीता कै बानी | बिरह बिबेक धरम निति सानी ||
लोचन सजल जोरि कर दोऊ | प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ ||

देखि राम रुख लछिमन धाए | पावक प्रगटि काठ बहु लाए ||
पावक प्रबल देखि बैदेही | हृदयँ हरष नहिं भय कछु तेही ||
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं | तजि रघुबीर आन गति नाहीं ||
तौ कृसानु सब कै गति जाना | मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना ||

छंद
श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली |
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ||
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे |
प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे || १ ||

धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो |
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ||
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली |
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली || २ ||

दोहा
बरषहिं सुमन हरषि सुन बाजहिं गगन निसान |
गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ीं बिमान || १०९ (क) ||
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार |
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार || १०९ (ख) ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

तब रघुपति अनुसासन पाई | मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ||
आए देव सदा स्वारथी | बचन कहहिं जनु परमारथी ||
दीन बंधु दयाल रघुराया | देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ||
बिस्व द्रोह रत यह खल कामी | निज अघ गयउ कुमारगगामी ||

तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी | सदा एकरस सहज उदासी ||
अकल अगुन अज अनघ अनामय | अजित अमोघसक्ति करुनामय ||
मीन कमठ सूकर नरहरी | बामन परसुराम बपु धरी ||
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो | नाना तनु धरि तुम्हइँ नसायो ||

यह खल मलिन सदा सुरद्रोही | काम लोभ मद रत अति कोही ||
अधम सिरोमनि तव पद पावा | यह हमरे मन बिसमय आवा ||
हम देवता परम अधिकारी | स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी ||
भव प्रबाहँ संतत हम परे | अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ||

दोहा
करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि |
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि || ११० ||

छंद
जय राम सदा सुखधाम हरे | रघुनायक सायक चाप धरे ||
भव बारन दारन सिंह प्रभो | गुन सागर नागर नाथ बिभो ||
तन काम अनेक अनूप छबी | गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ||
जसु पावन रावन नाग महा | खगनाथ जथा करि कोप गहा ||

जन रंजन भंजन सोक भयं | गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ||
अवतार उदार अपार गुनं | महि भार बिभंजन ग्यानघनं ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अज ब्यापकमेकमनादि सदा | करुनाकर राम नमामि मुदा ||
रघुबंस बिभूषन दूषन हा | कृत भूप बिभीषन दीन रहा ||

गुन ग्यान निधान अमान अजं | नित राम नमामि बिभुं बिरजं ||
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं | खल बृंद निकंद महा कुसलं ||
बिनु कारन दीन दयाल हितं | छबि धाम नमामि रमा सहितं ||
भव तारन कारन काज परं | मन संभव दारुन दोष हरं ||

सर चाप मनोहर त्रोन धरं | जरजारुन लोचन भूपबरं ||
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं | मद मार मुधा ममता समनं ||
अनवद्य अखंड न गोचर गो | सबरूप सदा सब होइ न गो ||
इति बेद बदंति न दंतकथा | रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा ||

कृतकृत्य बिभो सब बानर ए | निरखंति तवानन सादर ए ||
धिग जीवन देव सरीर हरे | तव भक्ति बिना भव भूलि परे ||
अब दीन दयाल दया करिऐ | मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ ||
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ | दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ||

खल खंडन मंडन रम्य छमा | पद पंकज सेवित संभु उमा ||
नृप नायक दे बरदानमिदं | चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ||

दोहा
बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात |
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात || १११ ||

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए | तनय बिलोकि नयन जल छाए ||
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा | आसिरबाद पिताँ तब दीन्हा ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ | जीत्यों अजय निसाचर राऊ ॥
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी | नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥

रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना | चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥
ताते उमा मोच्छ नहिं पायो | दसरथ भेद भगति मन लायो ॥
सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं | तिन्ह कहुँ राम भगति निज देहीं ॥
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा | दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

दोहा

अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस |
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस ॥ ११२ ॥

छंद

जय राम सोभा धाम | दायक प्रनत बिश्राम ॥
धृत त्रोन बर सर चाप | भुजदंड प्रबल प्रताप ॥ १ ॥
जय दूषनारि खरारि | मर्दन निसाचर धारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ | भए देव सकल सनाथ ॥ २ ॥

जय हरन धरनी भार | महिमा उदार अपार |
जय रावनारि कृपाल | किए जातुधान बिहाल ॥ ३ ॥
लंकेस अति बल गर्ब | किए बस्य सुर गंधर्ब ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग | हठि पंथ सब कें लाग ॥ ४ ॥

परद्रोह रत अति दुष्ट | पायो सो फलु पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीन दयाल | राजीव नयन बिसाल ॥ ५ ॥
मोहि रहा अति अभिमान | नहिं कोउ मोहि समान ॥
अब देखि प्रभु पद कंज | गत मान प्रद दुख पुंज ॥ ६ ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव | अब्यक्त जेहि श्रुति गाव ||
मोहि भाव कोसल भूप | श्रीराम सगुन सरूप || ७ ||
बैदेहि अनुज समेत | मम हृदयँ करहु निकेत ||
मोहि जानिए निज दास | दे भक्ति रमानिवास || ८ ||

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं |
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ||
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितबलं |
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ||

दोहा
अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल |
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल || ११३ ||

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे | परे भूमि निसचरन्हि जे मारे ||
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना | सकल जिआउ सुरेस सुजाना ||
सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी | अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी ||
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई | केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ||

सुधा बरषि कपि भालु जिआए | हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ||
सुधाबृष्टि भै दुहु दल ऊपर | जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ||
रामाकार भए तिन्ह के मन | मुक्त भए छूटे भव बंधन ||
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा | जिए सकल रघुपति कीं ईछा ||

राम सरिस को दीन हितकारी | कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ||
खल मल धाम काम रत रावन | गति पाई जो मुनिबर पाव न ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

दोहा

सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान |
देखि सुअवसरु प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान || ११४ (क) ||
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि |
पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि || ११४ (ख) ||

छंद

मामभिरक्षय रघुकुल नायक | धृत बर चाप रुचिर कर सायक ||
मोह महा घन पटल प्रभंजन | संसय बिपिन अनल सुर रंजन || १ ||
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर | भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ||
काम क्रोध मद गज पंचानन | बसहु निरंतर जन मन कानन || २ ||

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन | प्रबल तुषार उदार पार मन ||
भव बारिधि मंदर परमं दर | बारय तारय संसृति दुस्तर || ३ ||
स्याम गात राजीव बिलोचन | दीन बंधु प्रनतारति मोचन ||
अनुज जानकी सहित निरंतर | बसहु राम नृप मम उर अंतर || ४ ||
मुनि रंजन महि मंडल मंडन | तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन || ५ ||

दोहा

नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार |
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार || ११५ ||

करि बिनती जब संभु सिधाए | तब प्रभु निकट बिभीषनु आए ||
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी | बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी ||
सकुल सदल प्रभु रावन मार् यो | पावन जस त्रिभुवन बिस्तार् यो ||
दीन मलीन हीन मति जाती | मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे | मज्जनु करिअ समर श्रम छीजे ||
देखि कोस मंदिर संपदा | देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा ||
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ | पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ ||
सुनत बचन मृदु दीनदयाला | सजल भए द्वौ नयन बिसाला ||

दोहा
तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात |
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात || ११६ (क) ||

तापस बेष गात कृस जपत निरंतर मोहि |
देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि || ११६ (ख) ||

बीतें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ बीर |
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर || ११६ (ग) ||

करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं |
पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिं || ११६ (घ) ||

सुनत बिभीषन बचन राम के | हरषि गहे पद कृपाधाम के ||
बानर भालु सकल हरषाने | गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने ||
बहुरि बिभीषन भवन सिधायो | मनि गन बसन बिमान भरायो ||
लै पुष्पक प्रभु आगें राखा | हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ||

चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन | गगन जाइ बरषहु पट भूषन ||
नभ पर जाइ बिभीषन तबही | बरषि दिए मनि अंबर सबही ||
जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं | मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ||
हँसे रामु श्री अनुज समेता | परम कौतुकी कृपा निकेता ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

दोहा

मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद |
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद || ११७ (क) ||
उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम |
राम कृपा नहि करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम || ११७ (ख) ||

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए | पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ||
नाना जिनस देखि सब कीसा | पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ||
चितइ सबन्हि पर कीन्हि दाया | बोले मृदुल बचन रघुराया ||
तुम्हरें बल मैं रावनु मार् यो | तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार् यो ||

निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू | सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ||
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर | जोरि पानि बोले सब सादर ||
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा | हमरे होत बचन सुनि मोहा ||
दीन जानि कपि किए सनाथा | तुम्ह त्रेलोक ईस रघुनाथा ||

सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं | मसक कहूँ खगपति हित करहीं ||
देखि राम रुख बानर रीछा | प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ||

दोहा

प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि |
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि || ११८ (क) ||
कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान |
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान || ११८ (ख) ||

कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि |
सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि || ११८ (ग) ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अतिसय प्रीति देख रघुराई | लिन्हे सकल बिमान चढ़ाई ||
मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो | उत्तर दिसिहि बिमान चलायो ||
चलत बिमान कोलाहल होई | जय रघुबीर कहइ सबु कोई ||
सिंहासन अति उच्च मनोहर | श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ||

राजत रामु सहित भामिनी | मेरु सृंग जनु घन दामिनी ||
रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर | कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ||
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी | सागर सर सरि निर्मल बारी ||
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा | मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ||

कह रघुबीर देखु रन सीता | लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता ||
हनूमान अंगद के मारे | रन महि परे निसाचर भारे ||
कुंभकरन रावन द्वौ भाई | इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ||

दोहा
इहाँ सेतु बाँध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम |
सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम || ११९ (क) ||
जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम |
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम || ११९ (ख) ||

तुरत बिमान तहाँ चलि आवा | दंडक बन जहँ परम सुहावा ||
कुंभजादि मुनिनायक नाना | गए रामु सब कें अस्थाना ||
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा | चित्रकूट आए जगदीसा ||
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा | चला बिमानु तहाँ ते चोखा ||

बहुरि राम जानकिहि देखाई | जमुना कलि मल हरनि सुहाई ||
पुनि देखी सुरसरी पुनीता | राम कहा प्रनाम करु सीता ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

तीरथपति पुनि देखु प्रयागा | निरखत जन्म कोटि अघ भागा ||
देखु परम पावनि पुनि बेनी | हरनि सोक हरि लोक निसेनी ||
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि | त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि ||

दोहा
सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनाम |
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम || १२० (क) ||
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनीं हरषित मज्जनु कीन्ह |
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ दान बिबिध बिधि दीन्ह || १२० (ख) ||

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई | धरि बटु रूप अवधपुर जाई ||
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु | समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ||
तुरत पवनसुत गवनत भयउ | तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ||
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही | अस्तुती करि पुनि आसिष दीन्ही ||

मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी | चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ||
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए | नाव नाव कहँ लोग बोलाए ||
सुरसरि नाघि जान तब आयो | उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो ||
तब सीताँ पूजी सुरसरी | बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ||

दीन्हि असीस हरषि मन गंगा | सुंदरि तव अहिवात अभंगा ||
सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल | आयउ निकट परम सुख संकुल ||
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही | परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ||
प्रीति परम बिलोकि रघुराई | हरषि उठाइ लियो उर लाई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

छंद

लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती |
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती ||
अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेब्य जे |
सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते || १ ||

सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो |
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ||
यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा |
कामादिहर बिग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा || २ ||

दोहा

समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान |
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान || १२१ (क) ||
यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार |
श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार || १२१ (ख) ||

मास पारायण सत्ताईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरित मानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने षष्ठम सोपान समाप्तः

लंकाकाण्ड समाप्त:

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

www.viswakalyanam.org